रिलेटिव–रियल व्यु

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

रिलेटिव का अर्थ है सापेक्ष, एक दूसरे से जुड़ा हुआ। रियल का अर्थ है सनातन सत्य। रियल भूत, वर्तमान और भविष्य में बदलता नहीं है सदैव एक समान रहता है। संसार सापेक्ष है। संसरण करने के कारण ही यह संसार कहलाता है। इस संसार में मानव का जीवन सापेक्ष है। मानव की आवश्यकताएं समाज से पूरी होती है। निरपेक्ष जीवन बिताने वाला संसार से मुक्त होता है। प्रायः साधु–सन्त मुक्त जीवन बिताते हैं किन्तु जीवनयापन के लिए उन्हें भी समाज सापेक्ष होना पड़ता है। वे लोग भिक्षा समाज से ग्रहण करते हैं। इसके बदले में वे समाज को रियल ज्ञान देते हैं।

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड रिलेटिव है। एक परिन्दा यदि पर मारता है तो वह भी वाइब्रेशन के द्वारा सबको प्रभावित करता है। टी.वी., मोबाईल जैसे इलेक्ट्रोनिक यंत्रों के माध्यम से एक स्थान पर घटित होने वाली घटनाएं दूसरे स्थान पर सुनी और देखी जाती है यह सब वाइब्रेशन के द्वारा सम्भव है। समाज में कोई भी निरपेक्ष नहीं रह सकता। आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वह समाज पर निर्भर रहता है। बहुत से ऐसे कार्य हैं जिसे व्यक्ति अकेला नहीं कर सकता। अनेक लोगों के सहयोग से कार्य सम्पन्न होता है। चौरासी लाख जीव योनियों के सभी प्राणी सापेक्ष जीवन जीते हैं। कोरोना जैसी महामारी ने विश्व को सापेक्ष रूप से प्रभावित किया है। यह बिमारी प्राकृतिक नियमों के उल्लंघन का परिणाम है। यदि मनुष्य प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन करता है तो प्रकृति उसे अवश्य दण्ड देती है। लॉकडाउन के कारण प्रकृति का वातावरण स्वच्छ हो गया था। नदियों का जल पारदर्शी था। बड़े–बड़े शहर प्रदूषण के कारण अनेक बीमारियों के केन्द्र बन गए थे, यातायात के साधनों के बन्द होने के कारण पूर्ण रूप से प्रदूषण मुक्त हो गये थे। प्रकृति के पांचों तत्व अपने शुद्ध रूप में मानव के लिए वरदान हैं। उनके कारण मानव बीमारियों से मुक्त रहता है। शरीर रिलेटिव है। यह शरीर पिछले कर्मों का

भुगतान करने के लिए है। एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक सभी प्राणियों में चेतना है। सभी सापेक्ष हैं जिससे उनका जीवनयापन हो रहा है।

इस संसार में आत्मा ही रियल तत्व है। आत्मा अजर, अमर, अविनाशी है, आत्मा सनातन सत्य है। जड़ तत्व विनाशी तत्व है। यह पंचभूतों से बनता है। आत्मा चेतन परमाणुओं का समूह है। आत्मा सच्चिदानन्द है। सभी तत्वों के नष्ट हो जाने पर केवल एक तत्व आत्मा ही बचता है। इसीलिए इसको रियल कहा जाता है।

सृष्टि दो तत्वों से बनी है– चेतन और अचेतन। चेतना का गुण चैतन्य हैं। इस सृष्टि में केवल एक ही तत्व चेतन है, वह तत्व है आत्मा। इसके अतिरिक्त जितने भी तत्व हैं, वे जड़ या अचेतन हैं। जो भी तत्व चेतन दिखलायी देते हैं, वे सभी आत्मयुक्त है। पुरुष या आत्मा को चेतन तत्त्व तथा प्रकृति को अचेतन या जड़तत्त्व कहा गया है। पुरुष चेतन है। चेतन ही विषयों का ज्ञाता तथा द्रष्टा होता है। इसे अचेतन नहीं प्राप्त कर सकता। आत्मा ही वह द्रव्य है जिसमें बुद्धि, सुख–दुःख, राग–द्वेष, इच्छा प्रयत्न आदि गुण रहते हैं। ये गुण शरीर के नहीं आत्मा के ही हो सकते हैं। आत्मा देह, इन्द्रिय आदि से भिन्न है, नित्य और व्यापक है। मन से उसका प्रत्यक्ष होता है तथा मैं जानता हूं, मैं करता हूं, मैं सुखी हूं, मैं दुःखी हूं इत्यादि से आत्मा का अस्तित्त्व प्रकट होता है। इसलिए आत्मा के अस्तित्व का ज्ञान सभी को होता है, क्योंकि यह शाश्वत है।

मन अचेतन है, चित्त चेतन है। शरीर अचेंतन है किन्तु चेतना से युक्त होने के कारण चेतना की सारी क्रिया करता है। वैसे ही मन भी अचेतंन है। मन, वचन तथा शरीर तीनो अचेतन हैं किन्तु चेतना से युक्त होकर चेतना की क्रिया करते हैं। मन पुद्गलों को ग्रहण करता है। हमारे भाव सूक्ष्मतर है तथा मन भी सूक्ष्म है। वे हमारे सामने नही हैं। जो दिखाई देता है वह शरीर है। उसके भीतर एक सूक्ष्म शरीर है तथा उसके भीतर सूक्ष्मतर शरीर है। हम स्थूल को देखते हैं किन्तु यदि सूक्ष्म और सूक्ष्मतम शरीर के बारे मे चिन्तन न करें तो इस शरीर को समझा नहीं जा सकता। स्थूल शरीर का निर्माणं होता है कर्म शरीर के द्वारा और निर्माण मे निमित्त बनती है शरीर पर्याप्ति। वह पुद्गलों को ग्रहण करती है तथा शरीर के निर्माण में सहयोग देती है।

हमारा अस्तित्व चेतन और अचेतन का जटिलतम संयोग है। चेतन है हमारी आत्मा और अचेतन है शरीर। आत्मा अरूप है, अरस है, अगन्ध है और अस्पर्श है, इसलिए वह अदृश्य है। वह शरीर से बंधी हुई है, इस दृष्टि से दृश्य भी है। संसारी आत्मा शरीर मुक्त नहीं रह सकती। वह स्थूल तथा सूक्ष्म किसी न किसी शरीर के आश्रित रहती है। चेतना की अभिव्यक्ति का माध्यम शरीर है। आत्मा और शरीर का सम्बन्ध चिर–पुरातन है। ''सुख–दुःखानुभवसाधनम् शरीरम्'' अर्थात् जिस के द्वारा पौद्‌गलिक सुख–दुःख का अनुभव किया जाता है, वह शरीर है। जैन दर्शन की दृष्टि में आत्मा नित्य तथा अनित्य दोनों है। आत्मा का चैतन्य स्वरूप कदापि नहीं छूटता, अतः आत्मा नित्य है। चेतन कभी अचेतन और अचेतन कभी चेतन नहीं बन सकता। आत्म प्रदेशों में परिवर्तन नहीं होता इस दृष्टि से आत्मा अमर है।